डॉ. गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक

पूनम सिन्हा

डॉ० गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक
पूनम सिन्हा

सह-संपादक
डॉ० त्रिविक्रम नारायण सिंह

प्रतिभा प्रकाशन

प्रतिभा प्रकाशन

ISBN : 978-81-941225-8-6

प्रथम संस्करण

2020

सर्वाधिकार ©

संपादकाधीन

प्रकाशक

प्रतिभा प्रकाशन

केदारनाथ रोड (बिजली ऑफिस के पास)

मुजफ्फरपुर-842001

फोन : 9955658474, 9572980709

अक्षर-संयोजन

अमित कुमार कर्ण

आवरण

शशिकांत सिंह

मुद्रक

जी० एस० ऑफसेट, दिल्ली

मूल्य

350.00 (तीन सौ पचास रुपये)

Dr. Gopal Rai Aur Hindi Kathalochana

Rs. 350.00

अनुक्रम

संपादकीय

धरोहर :

−7

भाषा चिन्तन : शुद्ध भाषा की खोज

स्मृति-शेष बंधुवर — **गोपाल राय**

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी: डॉ० गोपाल राय — **निर्मला जैन** −13

समावेशी दृष्टि से लिखा हिन्दी उपन्यास — **हरदयाल** −22

का इतिहास −27

विद्धांग–बद्ध–कोदण्ड–मुष्टि–खर रुधिर-स्राव — **मैनेजर पाण्डेय** −34

उपन्यास की संरचना : संदर्भ-प्रेमचंद — **सत्यकाम** −41

के उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना

हिन्दी कहानी का इतिहास-2 साहित्य भी — **डॉ. पूनम सिन्हा** −54

इतिहास भी

इतिहासकार गोपाल राय — **डॉ. पूनम सिन्हा** −65

आलेख : — **अमिता पाण्डेय** −71

कथा-आलोचना की सैद्धांतिकी और

डॉ० गोपाल राय

डॉ० गोपाल राय की कथालोचना — **डॉ. रेवती रमण** −77

नलिनविलोचन शर्मा एवं गोपाल राय की — **डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सिंह**−81

साहित्यदृष्टि : संदर्भ-गोदान

हिन्दी उपन्यासालोचन के हिमालय : — **डॉ. सुधा बाला** −85

डॉ० गोपाल राय

गोपाल राय की सृजनात्मकता: कथालोचना — **डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय** −93

की विस्तृत भूमि

हिन्दी कहानी का इतिहास लेखन और — **डॉ. संजय पंकज** −98

डॉ० गोपाल राय

उपन्यास की संरचना और डॉ० गोपाल राय — **डॉ. त्रिविक्रम ना.सिंह**−102

डॉ. रामेश्वर द्विवेदी −109

गोपाल राय : एक दृष्टि — **डॉ. राजीव कुमार झा** –116
शेखर : एक जीवनी और गोपाल राय की विवेचना — **डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय** –121
मैला आँचल की आंचलिकता: डॉ० गोपाल राय — **डॉ. कल्याण कुमार झा** –133
उपन्यास आलोचना की परंपरा और गोपाल राय — **डॉ. संत साह** –137
मैला आँचल में लोकविश्वास के तत्त्वों की पहचान : डॉ० गोपाल राय — **डॉ. साक्षी शालिनी** –140
साहित्येतिहास-लेखन की कठिनाइयाँ और डॉ० गोपाल राय — **डॉ. राकेश रंजन** –144
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल में स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रकृति — **डॉ. सुशांत कुमार** –153
डॉ० गोपाल राय की औपन्यासिक आलोचना का अनुशीलन — **डॉ. संध्या पाण्डेय** –157
आंचलिक उपन्यास की अवधारणा और गोपाल राय — **डॉ. चित्तरंजन कुमार** –163
उपन्यास शिल्प और गोपाल राय का विवेचन — **सोनल** –170
गोदान की आलोचना प्रक्रिया और कथालोचक गोपाल राय — **अखिलेश कुमार** –176
हिन्दी उपन्यासालोचन और डॉ० गोपाल राय — **डॉ. माधव कुमार** –180
कथा आलोचक डॉ० गोपाल राय — **डॉ. पल्लवी** –185
डॉ० गोपाल राय : समीक्षा और साहित्याब्दकोश — **समीक्षा सुरभि** –188
कथालोचक डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ — **डॉ. प्रीति कुमारी** –200
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल की भाषागत विशिष्टता — **डॉ. इंदिरा कुमारी** –205
हिन्दी उपन्यास का इतिहास और गोपाल राय — **पल्लवी कुमारी** –211
उपन्यास की पहचान मैला आँचल के संबंध में गोपाल राय की विवेचना — **डॉ. अंशु कुमारी** –216
हिन्दी कहानी का इतिहास और डॉ० गोपाल राय — **विकास कुमार** –220

संस्मरण :

मैं और गोपाल राय
इतिहासकार-कोशकार डॉ० गोपाल राय : — **उषाकिरण खान** –225

एक संक्षिप्त परिचय
सुखद स्मृतियों में गोपाल राय — भगवानदास मोरवाल –227
डॉ. श्रीनारायण प्रसाद सिंह–232

साक्षात्कार :

डॉ० गोपाल राय का साक्षात्कार
(समीक्षा से साभार) — डॉ. पूनम सिन्हा –236
प्रो. सत्यकाम का साक्षात्कार : — डॉ. पूनम सिन्हा –243
डॉ० खगेन्द्र ठाकुर का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — डॉ. सुनीता गुप्ता –258
डॉ० रामवचन राय का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — डॉ. पूनम सिन्हा –263
डॉ. माधव कुमार
अरुणकमल का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — विनीता कुमारी –268
प्रतिवेदन –271

डॉ० गोपाल राय की औपन्यासिक आलोचना का अनुशीलन

—डॉ० संध्या पाण्डेय

हिन्दी कथालोचना के शीर्षस्थ समीक्षकों में एक डॉ० गोपाल राय ने साहित्य की एक ऐसी विधा पर समीक्षा लिखी, जिस पर प्रायः गंभीर लेखन का अभाव था। यदि देखा जाए तो काव्यालोचना की हिन्दी साहित्य में एक लम्बी परंपरा रही है किन्तु कथालोचना के क्षेत्र में हिन्दी बहुत समृद्ध नहीं थी। लेकिन अपनी शोध-प्रवृत्ति एवं आलोचकीय दृष्टि से हिन्दी कथा साहित्य पर श्रेष्ठ आलोचना प्रस्तुत कर प्रो० गोपाल राय ने हिन्दी कथालोचन को एक समृद्ध भूमि प्रदान की। कथा साहित्य के प्रति गहन रुचि, अध्ययन एवं विश्लेषण की प्रवृत्ति के फलस्वरूप ही आज उनकी अनेक कृतियाँ हमारे समक्ष हैं।

डॉ० गोपाल राय एक कुशल समीक्षक के साथ ही साथ सफल पत्रकार एवं कोशकार भी थे। 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास', 'गोदान : नया परिप्रेक्ष्य', 'उपन्यास का शिल्प', 'उपन्यास की संरचना', 'हिन्दी कहानी का इतिहास' जैसे आलोचनात्मक ग्रंथों के साथ-साथ दो खण्डों में प्रकाशित 'हिन्दी उपन्यास कोश' और चौदह खण्डों के विशाल 'हिन्दी साहित्याब्द कोश' उनकी निरंतर सृजनशीलता के परिचायक हैं। साथ ही, साहित्यिक समालोचना की अग्रणी पत्रिका 'समीक्षा' के संपादक के रूप में भी उन्हें जाना जाता है। वास्तव में 'समीक्षा' ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एक बड़े अभाव की पूर्ति की है। 'समीक्षा' वह मंच है जिसने डॉ० गोपाल राय के समीक्षक, आलोचक और साहित्येतिहासकार रूप को तो गढ़ा ही, साथ ही अनेक नए समीक्षकों को भी जन्म दिया।

गोपाल राय जी ने कहानी और उपन्यास दोनों विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई, किन्तु विशुद्ध रूप से वे उपन्यास के आलोचक हैं। उनके लेखन की शुरुआत उपन्यास विधा से हुई थी। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद की

[illegible] 'हिन्दी [illegible]

[illegible] भी भ प्राप्त प्रथम [illegible]

[illegible] ही [illegible] थी। यहाँ [illegible]

[illegible] अपने कथों पर भी [illegible]

[illegible] विकास पर पाठकों की रुचि का प्रभाव' विषय पर [illegible] की उपाधि प्राप्त की। गोपाल राय ने अपने शोध प्रबंध में [illegible] का विवेचना करते हुए उपन्यास के विषय, [illegible] को केन्द्र में रखा है। इस सन्दर्भ में उनका कहना है कि "[illegible] जानकारी है, यह प्रयत्न हिन्दी उपन्यासालोचन के क्षेत्र में [illegible] के क्षेत्र में भी प्रथम है।"

भारतेन्दु युग से ही हिन्दी गद्य विधाओं नाटक, [illegible] आदि की सुदीर्घ परंपरा विकसित हुई। अतः इन विधाओं के [illegible] साथ-साथ इनके मूल्यांकन की आवश्यकता भी महसूस होने लगी। [illegible] स्वरूप जब तक विकसित नहीं था, तब तक आलोचना भी [illegible] ही सीमित थी। सर्वप्रथम भारतेंदु युग में ही पत्र-पत्रिकाओं में [illegible] के रूप में आलोचना का विकास हुआ। जैसे-जैसे कथ्य में [illegible] गई, वैसे-वैसे आलोचना का स्वरूप भी विकसित होता गया। [illegible] उपन्यास की बनावट पर ध्यान दें तो पर्याप्त भेद दिखाई पड़ता है। [illegible] उपन्यास की भिन्नता को बताते हुए डॉ० गोपाल राय कहते हैं

"उपन्यास के जन्म के पूर्व 'कथा' श्रव्य ही होती थी। [illegible] उपन्यास का एक अंतर प्रथम का श्रव्य और दूसरे का पाठ्य होना [illegible]

गद्य विधा की समीक्षा के लिए अतिवादिता से बचते हुए [illegible] एवं गहन दृष्टि का होना आवश्यक है, जिसका पूरा पालन डॉ० [illegible] के समीक्षात्मक ग्रंथों में दिखाई पड़ता है। वे [illegible] गंभीर व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने उपन्यास पर अभूतपूर्व कार्य किया। [illegible] प्रमुख तत्त्व यथार्थ के प्रति आग्रह होता है। उपन्यास के इसी [illegible] वैशिष्ट्य को उद्घाटित करते हुए डॉ० गोपाल राय कहते हैं

"उपन्यास पर्याप्त आकार की वह मौलिक गद्यकथा है [illegible] को एक, काल्पनिक, पर यथार्थ संसार में ले जाती है, जो [illegible] व्यक्तिगत रूप से अनुभूत और सर्जित होने के कारण नवीन होता है।"

उपन्यास को यथार्थ के धरातल पर लाने में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। देशकाल व पात्रानुकूल भाषा की अनुपस्थिति में कोई [illegible]

उपन्यास यथार्थ से कोसों दूर हो जाएगा। औपन्यासिक संरचना में भाषा के महत्त्व को स्वीकारते हुए डॉ० गोपाल राय कहते हैं ''औपन्यासिक संरचना को यथार्थवादी स्वर प्रदान करने में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। उपन्यास के 'गद्य' में लिखे जाने का तर्क भी यही है कि गद्य वास्तविक जिन्दगी में व्यवहार की भाषा है।''[9]

हिन्दी उपन्यास की एक लम्बी परंपरा रही है। उपन्यास की इसी परंपरा को 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास' नामक अपनी पुस्तक में चरणबद्ध रूप में डॉ० गोपाल राय ने प्रस्तुत किया है। किसी भी इतिहास की पुस्तक में सबसे दुष्कर कार्य है- काल-विभाजन और नामकरण, किन्तु अपनी मेधा शक्ति से डॉ० गोपाल राय ने इसे कुशलतापूर्वक निरूपित किया है। हिन्दी उपन्यास के विकास को विविध चरणों में आबद्ध कर, जो नामकरण उन्होंने किया, वे निम्न प्रकार है-

1. दरवाजे पर दस्तक (1801-1869)
2. नवजागरण और हिन्दी उपन्यास (1870-1890)
3. रोमांस, पाठक और उपन्यास (1891-1917)
4. यथार्थ के नये स्वर (1918-1947)
   (क) केन्द्र में किसान (1918-1936)
   (ख) नयी दिशाओं की तलाश (1937-1947)
5. विमर्श के नए क्षितिज (1948-1980)
6. समकालीन परिदृश्य (1981-2000)

डॉ० गोपाल राय द्वारा प्रस्तुत हिन्दी उपन्यास के उपरोक्त काल विभाजन में हिन्दी उपन्यास के विकास के साथ ही साथ प्रत्येक काल की प्रवृत्तियाँ भी अपनी समूची विशिष्टताओं के साथ उपस्थित हैं। किसी भी समय-विशेष की कोई भी प्रवृत्ति अथवा रचनागत विशिष्टताओं को छोड़कर गोपाल राय ने अपना औपन्यासिक विवेचन नहीं किया।

हिन्दी के प्रथम उपन्यास को लेकर विवाद की स्थिति सदैव रही है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने जहाँ हिन्दी का प्रथम उपन्यास लाला श्रीनिवासदास के 'परीक्षा गुरु' को माना है, वहीं विजयशंकर मल्ल आदि कुछ आलोचकों ने श्रद्धाराम फुल्लौरी के 'भाग्यवती' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास माना, किन्तु डॉ० गोपाल राय ने परंपरागत स्थापनाओं का अंधानुकरण न कर हिन्दी के पहले उपन्यास के रूप में पं० गौरीदत्त के 'देवरानी जेठानी की कहानी' को प्रमुखता दी। वे कहते हैं- ''उपन्यास लगभग सत्तर वर्ष तक पारसीवादियों

[illegible]

डॉ० गोपाल राय ने हिन्दी में 'उपन्यास' शब्द के [illegible] प्रकाश डाला है [illegible] उनकी सूक्ष्म [illegible] दृष्टि को [illegible] हिन्दी के उपन्यास शब्द के प्रयोग [illegible] के [illegible] को लेकर [illegible] कहते हैं "हिन्दी में नॉवेल के अर्थ में उपन्यास शब्द का प्रथम प्रयोग [illegible] हरिश्चन्द्र ने 1875 ई० में 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' के [illegible] और [illegible] के अंकों में [illegible] रूप में प्रकाशित अधूरी कथा '[illegible]' [illegible] किया था।" परंतु इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता है [illegible] साहित्य के बहुत से लेखकों ने तब तक नॉवेल के लिए 'उपन्यास' शब्द [illegible] स्वीकार नहीं किया था।

डॉ० गोपाल राय ने हिन्दी साहित्य के अनेक उपन्यास [illegible] आलोचना लिखकर साहित्य जगत को समृद्ध किया। '[illegible]', '[illegible]', 'शेखर : एक जीवनी', 'मैला आँचल', 'दिव्या' और '[illegible]' इन [illegible] उपन्यासों पर समीक्षा पुस्तक लिखकर उन्होंने हिन्दी साहित्य के [illegible] को नई दृष्टि प्रदान की। शुक्ल जी के समय में प्रेमचंद के उपन्यासों की जो आलोचना हुई, वह नकारात्मक अधिक थी। प्रेमचंद पर यह आरोप लगाया जाता था कि उन्होंने समस्याओं का आदर्शवादी एवं कृत्रिम समाधान प्रस्तुत किया है। लेकिन शुक्ल जी ने प्रेमचंद की महत्ता को जानते हुए उन्हें 'देश का गौरव' कहकर सम्बोधित किया। गोपाल राय जी ने प्रेमचंद पर [illegible] आरोपों को खारिज करते हुए कहा है कि उनसे इससे बेहतर विकल्प की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। इतना ही नहीं हिन्दी उपन्यास के स्वरूप की पहचान हेतु उन्होंने प्रेमचंद के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'गोदान' के अध्ययन को महत्ता दी-

"गोदान हिन्दी उपन्यास में 'उस शिखर के समान है जिसके [illegible] और पर्वत के दो भागों के उतार-चढ़ाव हैं।' इसके [illegible] अध्ययन के बिना हिन्दी उपन्यास के स्वरूप की पहचान संभव नहीं।"

वस्तुत: डॉ० गोपाल राय ने आचार्य नलिन विलोचन शर्मा द्वारा [illegible] गए समीक्षात्मक सूत्रों से अपने विश्लेषणात्मक अध्ययन का प्रारंभ किया [illegible]

अपनी अवधारणाओं को दृढ़ता से रखा। वे गोदान को 'भारतीय जीवन की विशाल धारा का यथार्थ चित्र' मानने की अपेक्षा इसे 'ग्राम जीवन' और 'कृषि संस्कृति' का अद्वितीय उपन्यास मानते हैं। प्रेमचंद की [illegible] भाषा के वैशिष्ट्य का विश्लेषण भी उन्होंने गहराई से किया है। वे यह स्वीकार करते हैं कि कथ्य वैविध्य, विजन, चरित्र-सृष्टि, शिल्प और भाषा, सभी दृष्टियों से प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास को ऐसी ऊँचाई पर पहुँचाया, जो आज भी एक मानदण्ड के रूप में स्वीकृत है।

डॉ० गोपाल राय का आलोचकीय व्यक्तित्व इतना प्रबल है कि उन्होंने उपन्यास पर आलोचना लिखते हुए न केवल कथ्य पर चर्चा की अपितु औपन्यासिक संरचना का भी विशद् रूपायन किया है। उपन्यास की सफलता एवं सार्थकता हेतु उन्होंने कथानक, भाषा, शिल्प, रूप, पात्र को भी प्रमुखता दी है। अन्य विधाओं के बनिस्पत उपन्यास की महत्ता को बताते हुए वे कहते हैं कि-

''कविता में संवेदना की गहराई अपनी सीमाओं को छू सकती है, नाटक में जीवन अपनी तीव्रता में रूपान्तरित हो सकता है, पर जीवन की व्यापकता और वैविध्य का अंकन तो उपन्यास में ही संभव है।''[8]

उपन्यास के साथ-साथ डॉ० गोपाल राय ने उपन्यासकारों पर भी विमर्श प्रस्तुत किया है जो उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध नहीं हुए। साहित्य इतिहासकारों ने इन्हें 'महान गौण' कहा है, वहीं राय जी इन्हें 'उल्लेखनीय गौण' कहते हैं, जैसे- राजकमल चौधरी, मुक्तिबोध, गिरीश अस्थाना आदि। डॉ० गोपाल राय का मानना है कि 10,000 से 30,000 शब्दों तक की कथा रचनाएँ उपन्यासिका कही जानी चाहिए। इसी को ध्यान में रखते हुए वे मंजुल भगत की 'अनारो', 'तिरछी बौछार' आदि को उपन्यासिका की श्रेणी में रखते हैं।

इस प्रकार यह कहना ठीक ही होगा कि डॉ० गोपाल राय ने अपने अभूतपूर्व आलोचकीय दृष्टि एवं शोध-प्रवृत्ति के फलस्वरूप हिन्दी कथालोचना को महिमामण्डित किया है। वे आजीवन साहित्य सेवा में संलग्न रहने वाले महान लेखक थे। उन्होंने हिन्दी के हर छोटे-बड़े उपन्यासों का अध्ययन, मनन करके निष्पक्ष व निर्भीक भाव से अपने विश्लेषण को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। समीक्षा में वैज्ञानिक पद्धति को विकसित करने का श्रेय उन्हें ही प्राप्त है। वैसे तो अनेक बड़े लेखकों मधुरेश, नवल किशोर, चंद्रकांत बाँदिवडेकर, नामवर सिंह आदि ने उपन्यास पर आलोचना लिखी है किन्तु

डॉ० गोपाल राय का नाम [illegible], विशषतः [illegible] क्षेत्र में अत्यंत [illegible] लिया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. [illegible] के स्वर सं० सत्यकेतु सांकृत, अनंग प्रकाशन [illegible] 201, पृ०-162
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास- पृ० गोपाल राय, राजकमल प्रका० नई दिल्ली, सं०- 2019, पृ० 13
3. वही, पृ० 24
4. उपन्यास की संरचना- प्रो० गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन [illegible] दिल्ली, सं०- 2012, पृ० 33
5. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, पृ० 13
6. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, पृ० 37
7. गोदान : नया परिप्रेक्ष्य, गोपाल राय, अनुपम प्रकाशन, पटना, [illegible] 2007, पृ० 6
8. उपन्यास की संरचना, पृ० 89

सहायक प्राध्यापक
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय
मुजफ्फरपुर